न्यूज़ इयातमेल
5 आदित्यपुर शुक्रवार, 3 दिसंबर 2010

नि:शक्त बच्चों का मसीहा रिद्म

जमशेदपुर (रिपोर्टर) : समाज में जहां आजकल नेत्रहीन, शारीरिक व मानसिक नि:शक्त बच्चों को जहां काफी उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है, वहीं शहर की ही एक संस्था रिद्म उनके लिये मददगार साबित हो रहा है. उन बच्चों को न सिर्फ प्रशिक्षण दिया जा रहा है, बल्कि रोजगार प्राप्त करने की दिशा में मदद भी कर रहा है. इस कार्य में संस्था के सचिव विवेकानंद डे अपनी पूरी मेहनत व लगन के साथ लगे हुए हैं.

उनका एक ही मकसद है कि किस तरह बच्चों को गीत-संगीत का प्रशिक्षण देकर उन्हें इस लायक बनाया जाए कि वे भी समाज के मुख्य धारा से जुड़ सकें और अपने पैरों में खड़े हो सकें. एक तरह से यह कहा जा सकता है कि नेत्रहीन बच्चों के लिये यह संस्थान वरदान साबित हो रहा है. कला के साथ-साथ उनके आजीविका का साधन भी उपलब्ध कराने का प्रयास हो रहा है. फिलहाल संस्थान में 20 से अधिक नेत्रहीन व शारीरिक रुप से विकलांग बच्चे गीत-संगीत का प्रशिक्षण ले रहे हैं. हालांकि यहां साधारण बच्चे भी आकर सीखते हैं. इस संबंध में और जानकारी के लिये विवेकानंद डे (मोबाइल नंबर - 09835111882) से संपर्क किया जा सकता है.

...ऐसे हुई रिद्म की स्थापना

विवेकानंद डे बताते हैं वर्ष 2000 में वे ट्रेन से कहीं जा रहे थे तो एक नेत्रहीन को गीत गाकर भीख मांगते देखा. इसके बाद साकची गोलचक्कर में एक नेत्रहीन को भीख मांगते देखा. तब उनके मन में ख्याल आया कि क्यों ने इन नेत्रहीनों को प्रशिक्षण देकर इस लायक बनाया जाए कि वे कुछ रोजगार कर सकें. इसी सोच के बाद ही वर्ष 2001 में रिद्म की स्थापना की गई, जो आजतक निरंतर चल रही है.

अपना भवन नहीं रहने का है मलाल

संस्था ने 10 वर्ष पूरे कर लिये, लेकिन इसका अपना कोई भवन नहीं है. इस बात का मलाल श्री डे के साथ-साथ विद्यार्थियों को भी है. उनका कहना है कि अपना भवन नहीं रहने के कारण काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है. यहां तक कि आधुनिक वाद्य यंत्रों तथा अन्य उपकरणों के लिये भी दूसरों पर ही निर्भर रहना पड़ता है.

अपना जौहर दिखा चुके हैं बच्चे

रिद्म के विद्यार्थी अबतक कई कार्यक्रमों में अपना जौहर दिखाते हुए अपना लोहा भी लोगों से मनवा चुके हैं. यहां के नेत्रहीन छात्र जयदेव, वीरु, नि:शक्त बच्चे बिट्टू आदि व्यवसायिक कलाकारों के रुप में उभरने के साथ-साथ सामान्य छात्र रविन्दर ने एम टीवी के तृतीय चक्र, सारांश ने अपने स्कूल बैंड का कमान के साथ ही आयूष ने अपने विद्यालय में तृतीय स्थान प्राप्त किया है.

तीन केन्द्र होते हैं संचालित

रिद्म ने शहर के तीन स्थानों के सहयोग से बच्चों को प्रशिक्षण देने का कार्य रही है. साकची के बारादवरी क्लब हाउस, बिष्टुपुर के रोड स्थित अर्बन सर्विसेज सेंटर (सीबीएमडी कार्यालय के समीप) एवं आदित्यपुर मांझी टोला रोड स्थित ओशो ध्यान केन्द्र में बच्चों को सिखाया जा रहा है. उपरोक्त सभी संस्थानें किसी न किसी के सहयोग से चल रही है.

अबतक कई कार्यक्रम कर चुका है रिद्म

संस्थान द्वारा अबतक कई आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जा चुका है. 12 मार्च, वर्ष 2003 में संस्थान ने अपना पहला कार्यक्रम बारादवारी क्लब हाउस में ही प्रस्तुत किया. इसके बाद लगातार कई कार्यक्रम में यहां के बच्चों ने प्रस्तुत किये.

गरीबों में वस्त्र वितरण भी करेगा रिद्म

शहर में बढ़ती ठंड को देखते हुए संस्थान ने शीघ्र ही गरीबों के बीच ऊनी वस्त्र तथा अन्य वस्त्रों का वितरण करने की योजना बनाई है. हालांकि इसकी तिथि अभी तय नहीं है, संभवत: यह कार्यक्रम शीघ्र ही किया जाएगा.

प्रभात खबर
जमशेदपुर, शनिवार, 22 अप्रैल, 2006

नेत्रहीनों, मूक बधिरों ने बनायी बैंड पार्टी

ब्रजेश सिंह

जमशेदपुर, 21 अप्रैल : हौसले बुलंद हों, तो किसी भी मुश्किल को आसान किया जा सकता है. ऐसा ही कुछ कर दिखाया है शहर के कुछ नेत्रहीन और मूक-बधिर युवकों ने. यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि

दूरदर्शन पर देंगे पहला कार्यक्रम

उन्होंने सुर और ताल की बारात सजायी है. इन लोगों ने एक ऐसी बैंड पार्टी बनायी है, जो किसी भी कार्यक्रम में 'ऑर्केस्ट्रा' प्रस्तुत कर सकती है. यूफोरिया की तर्ज पर बनायी गयी यह सी बैंड पार्टी बहुत जल्द नयी ऊचाइयों को छूने के लिए बेकरार है. दूरदर्शन ने भी उनके द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम का प्रसारण करेगा. शेष पेज 15 पर

नेत्रहीनों, मूक बधिरों ने...

बारीडीह के रहने वाले नेत्रहीन सियाराम के नेतृत्व में संचालित इस बैंड पार्टी को तैयार करने में रिदम नामक संस्थान चलाने वाले विवेकानंद दे का बहुत बड़ा हाथ है. उन्होंने दुनिया नहीं देखने वाले को संगीत की दुनिया से रू-ब-रू कराया और सुर और ताल की जानकारी दी. स्वरोजगार के लिए के लिए ऐसे अक्षम युवकों द्वारा उठाये गये सक्षम कदम को खूब दाद मिल रही है. इसी का नतीजा है कि उन्हें लगातार ऑर्डर मिल रहे हैं. इस बैंड पार्टी में नेत्रहीन जयदेव, प्रीतपाल सिंह, मोहम्मद यासीन, दीपक, अमर और मूक-बधिर संजीव शर्मा समेत अन्य लोग शामिल है. बारीडीह के रहने वाले सियाराम ने कहना है कि वे किसी पर बोझ नहीं बनना चाहते. यही वजह है कि उनलोगों ने स्वरोजगार के लिए बैंड पार्टी के संचालन का रास्ता अपनाया. बाराद्वारी के रहने वाले विवेकानंद दे ने बताया कि शरूआती दिक्कतों के बावजूद नेत्रहीन युवकों की तत्परता और हिम्मत बैंड पार्टी खड़ी करने में सहायक बनी. इन लोगों द्वारा तैयार की गयी धुन और गाये गीत को कोई सुन ले, तो कोई भी अपने दांतों तले अंगुली दबा ले.

Thursday, March 9, 2006
Hindustan Times,

HT Jamshedpur

Adding Rhythm to a sightless world

ANKUSH Singh
Jamshedpur, March 8

THERE IS scarcely any rhythm in the lives of the visually challenged. 'Rhythm', a city-based cultural organisation has taken up the cudgel to infuse some musical light in the dark lives of blind students.

Apart from creating musicians out of students from National Association for Blind (NAB), the organisation has also provided a learning platform to physically and mentally handicapped students, who want to excel in the field of music.

Though teaching music to the blind and the mentally handicapped children is a tough task, Vivekananda Dey, founder president of the organisation took it as a challenge. He came up with new methods to teach them the nuances of music. His perseverance bore fruits. Today, there are three blind students in his organisation, who are now earning their livelihood through music.

"Teaching the handicapped is a far greater challenge than teaching a normal student who can see and understand a particular musical instrument. It was in December, 2000, that I got associated with NAB and took up the challenge. Being a singer myself, I was aware that music could make the students self-dependent by providing them a means for earning. Moreover, music provided entertainment to these students," Dey said.

He also informed that there are around a dozen handicapped students in his organization, including mentally handicapped students from the School of Hope.

Continued on page 2

ARVIND SHARMA
Members of Rhythm playing guitar at a musical programme.

Rhythm to a sightless world

Continued from page 1

"For the first four months, I was not able to figure out how to train visually impaired students. Playing various instruments was also a new thing for them. Then I started teaching them how to understand a musical instrument with their own feel," Dey said.

Though, the learning process was slow Dey says, "Today, three of my visually impaired students, are self-dependent. I want to add on to the list as music should also reach the deprived section of the society," Dey said. Recently, the organisation launched its website -- www.rhythm4u.com -- to increase its popularity.

परिक्रमा
2 | दैनिक जागरण 10 फरवरी, 2009

नि:शक्तों को जीना सिखा रही 'रिद्म'

आठ साल पहले की बात है। दृष्टिहीन बच्चों को सहायता मांगते देख एक संवेदनशील संगीत शिक्षक का मन विचलित हो गया। कुदरत की सजा भोग रहे इन बच्चों के अंधेरे जीवन को रौशन करने की इच्छा तो हुई, लेकिन मामूली आर्थिक स्थिति वाला शिक्षक भला कर ही क्या सकता था। फिर भी कुदरत के मारे बच्चों के लिए कुछ करने का जज्बा कम नहीं था, इसलिए सोचने लगा कि कैसे इनकी मदद की जाए। चूंकि शिक्षक विवेकानंद डे के पास संपत्ति के रूप में संगीत की ही थाती थी, तो सोचा इसी के सहारे ऐसे नि:शक्त बच्चों को अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाया जा सकता है। यह एक ऐसा सपना था जो दु:साध्य था, किंतु दृढ़ प्रतिज्ञ विवेकानंद डे ने इसको साकार करने के लिए सन् 2001 में

संगीत संस्था रिद्म की स्थापना की। इस शिक्षक के जज्बात ने सोनारी आर्मी कैम्प के स्टेशन कमांडर कर्नल एस. जगपाल, ब्रिगेडियर मोहब्बत सिंह, ब्रिगेडियर एएस चौधरी, स्टेशन कमांडर कर्नल जतिंदर सिंह वालिया, मेजर अजय कुट्टीनो, भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी डा. नितिन मदन कुलकर्णी, रविन्द्र कुमार अग्रवाल, राजेश शर्मा, इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन के एलपीजी डिवीजन इंडेन के क्षेत्रीय प्रबंधक एमआर दास, टाटा स्टील कारपोरेट कम्युनिकेशंस प्रमुख संजय चौधरी, अर्बन सर्विसेज के प्रमुख संजय को प्रभावित किया। लिहाजा ये महानुभाव संस्था के साथ जुड़ कर मानव सेवा के इस महान कार्य को आगे बढ़ाने में जुट गए। आज रिद्म दृष्टिहीन, शारीरिक-मानसिक नि:शक्त बच्चों को संगीत की शिक्षा देकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने वाली संस्था के रूप में झारखंड की पहचान बना चुकी है। संस्था समय-समय पर कार्यक्रम आयोजित कर प्रशिक्षित नि:शक्त बच्चों की प्रतिभा को न केवल मंच प्रदान कर रही, बल्कि इसके जरिए उनकी आजीविका का द्वार भी खोलती है। आज संस्था के कार्यक्रम आकाशवाणी के जमशेदपुर, रांची, चाईबासा, हजारीबाग, डाल्टेनगंज, भागलपुर केंद्रों के साथ-साथ विविध भारती के एफएम चैनल व बिग 92.7 एफएम से प्रोग्राम प्रसारित होते रहते हैं। चूंकि संस्था की आय का कोई सुनिश्चित साधन नहीं, इसलिए संगीत का प्रशिक्षण दिये जाने की योजना तैयारी की गई। वाद्य यंत्र अथवा गायन सीखने के इच्छुक लोग मोबाइल नं. - 9835111882 अथवा संस्था की वेबसाइट : डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू. रिद्म4यू.कॉम पर संपर्क कर सकते हैं।

hindustantimes
RANCHI, MONDAY, APRIL 11, 2011, 4 PAGES www.hindustantimes.com
my city 03

Undaunted by challenges

Animesh Bisoee
animeshbisoee@rediffmail.com

They have already conquered physical obstacles to excel in music. Now, they are looking forward to surmounting financial constraints to form the first professional rock band of the differently-abled in the country.

Rhythm, a Jamshedpur-based organisation, which has been helping visually challenged and differently-abled artistes to showcase their musical skills, is looking for corporate support to launch its rock band. They are behind many top-notch performances at important functions in the city and have also earned appreciation from performing at All India Radio programmes at Jamshedpur and Ranchi.

Vivek Dey, secretary of the decade-old organisation, said that they are eager to launch the rock band without losing focus on light music. "We have been performing light music and even singing pop and semi-classical songs for the last few years. However, to keep up with the changing times, the artistes have decided to take up rock music. We are not scared of this challenge. We can perform rock numbers within a year of getting the instruments and proper infrastructure," says Dey.

For the rock group, they require financial support to the tune of ₹ 2 lakh. "We are approaching corporate sectors who have supported us in the past, and also Indian army officials for their contributions, so that we can purchase a synthesizer, two professional Spanish guitars, a manual drum, one bass guitar and other percussion instruments. Once we get these instruments, it is only a matter of time before we begin performing rock music and songs," Vivek adds.

Currently, the organisation practises music once a week at a single room provided by Tata Steel Urban Services at Bistupur and comprises 13 visually challenged artistes; five differently-abled musicians and 15 scheduled caste and scheduled tribe artistes.

The institution has taken on rent a single-room house near Chandil to provide training in music to differently-abled scheduled caste and scheduled tribe candidates. It operates once a week for two hours.

The money for the rent and other expenses is borne by the secretary, who donates what he earns from teaching music at different centres and also a part of the sum earned from stage shows. Then there are contributions by Tata Steel, Indian Army and ancillary industries.

HT PHOTO

Rhythm, an organisation trying to set up a rock band with differently-abled members

मंगलवार | जमशेदपुर 19 अप्रैल, 2011 बैसाख कृष्ण प्रतिपदा संवत 2068
झारखंड का सर्वाधिक प्रसारित दैनिक
प्रभात खबर

नाकाबिल कहलाने वाले बन रहे हैं दूसरों के प्रेरणाश्रोत

मूक-बधिर बच्चों का म्यूजिकल बैंड

दो विकलांग बच्चों को संगीत का प्रशिक्षण देने की शुरुआत करने का सिलसिला 35 नौनिहालों तक पहुंचा

संदीप सावर्ण ■ जमशेदपुर

दिल में आसमान छूने की हसरत और लबालब दुनिया को जीतने की चाहत दुनिया के सामने एक ऐसा चमकता सितारा बनने की, जिसकी चमक में हर कोई खो जाये. यह कहानी हाल के उन मूक बधिरों और मानसिक विकलांगों की है, जिन्होंने अपनी मेहनत के बल पर यह कारनामा कर दिखाया है, जिसे दुनिया सलाम कर रही है. बात शुरू होती है आद्या स्टेशन से. स्टेशन पर ट्रेन में एक नेत्रहीन बांसुरी बजा रहा था. इस दौरान वह लोगों से अपनी किलगणता की दुहाई देकर पैसे मांग रहा था. ट्रेन में सफर कर रहे शहर के विवेकानंद की नजर उस पर शेष पेज 17 पर

मैं नेत्रहीन हूं. इसकी वजह से लोगों से कई तरह के ताने मिलते थे. लेकिन अब वे ही जब तालियां बजा कर मेरी तारीफ करते हैं तो दिल को बड़ा सुकून मिलता है कि मानो मैंने जग जीत लिया है. मैं कोशिश करता हूं और महीने के तीन से चार हजार रुपये कमा लेता हूं. - बीरू

मानसिक और शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों को जब मैंने संगीत का प्रशिक्षण देने की शुरुआत की तो वर्ष तीन शुरू पर डरते थे. लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी. आज हम रेडियो, दूरदर्शन, बड़े-बड़े कार्यक्रम में भी परफॉर्म करने का माद्दा रखते हैं. - विवेकानंद, प्रशिक्षक

आया कि क्यों नहीं इन लोगों को सही ट्रेनिंग दी जाये. फिर क्या था जमशेदपुर पहुंच कर शहर के शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग बच्चों को ट्रेनिंग देने की शुरुआत की गयी. तब साल पहले दो बच्चों को गीत-संगीत का प्रशिक्षण देना शुरू किया गया. धीरे-धीरे कारवां बनना शुरू हुआ और अब 35 मानसिक और शारीरिक विकलांग बच्चे गाना गाने के साथ-साथ गिटार, कैसियो, ड्रम, ऑक्टो पैड के साथ-साथ कई अन्य वाद्य यंत्र बजा रहे हैं. बैंड का नेतृत्व करने वाले विकेकानंद के अनुसार जब इसकी शुरुआत की गयी थी तो कहा जाता था कि यह कभी संभव नहीं होगा, लेकिन सतत प्रयत्नशील रहने की वजह से आज ये 35 विकलांग बच्चे अपने पैरों पर खड़े हैं और सबों को सीख भी दे रहे हैं.

रॉक बैंड शुरू करने की है योजना

एक मंजिल अभी हासिल हुई है, लेकिन इरादा और बुलंदियों को छूने का है. फिलहाल चल रहे बैंड को रॉक बैंड में तब्दील करने की योजना है. इसके लिए प्रयास भी किये जा रहे हैं. सबसे ज्यादा परेशानी आर्थिक मदद नहीं होने से उत्पन्न हो रही है. हालांकि, प्रशिक्षक विवेकानंद की माने तो आने वाले दिनों में ये बच्चे अच्छे-अच्छे रॉक बैंड को पछाड़ने जरूर आयेंगे.

पेज एक का शेष
17. मूक-बधिर...

पढ़ी और वही से एक विचार उनके दिमाग में

हिन्दुस्तान जमशेदपुर, सोमवार, 27 मार्च 2006 16

नेत्रहीन तैयार कर रहे हैं जमशेदपुर में अपना म्यूजिकल बैंड

अनीस

जमशेदपुर। उन्हें उम्मीद है कि उनका भी बैंड यूफोरिया, जुनून, कलोनियल कजन्स की तरह चमकेगा। उनके भी गीत आसमान चूमेंगे, फिजा में उनके संगीत की लहर होगी और हर जुबान उनके लय पर हिलेंगे। लेकिन उनका अंदाज तमाम म्यूजिकल बैंड से अलग होगा। उन्हें सब देखेंगे, लेकिन अफसोस वे किसी को नहीं देख पायेंगे। तालियों की गड़गड़ाहट, लोगों की वाहवाही का सिर्फ वे एहसास करेंगे। परचम लहरेगा उनके हाथों से लहरेगा, लेकिन वे लहराते परचम को देख नहीं पायेंगे। जमशेदपुर शहर में इन्हीं अहसासों को लिए तैयार हो रहा है नेत्रहीनों का एक म्यूजिकल बैंड, जिसकी तैयारी रिदम नामक संगीत संस्था कर रही है। इस म्यूजिकल बैंड में फिलवक्त छह लोग शामिल हैं, जो सभी नेत्रहीन हैं। इनका रियाज बिष्टुपुर के रोड स्थित सीडीएंडएसडब्ल्यू प्रांगण में होता है और सभी लोग बाराद्वारी क्लब हाउस स्थित रिदम के कार्यालय में जुटते हैं। दरअसल नेत्रहीनों का यह म्यूजिकल बैंड रिदम के निदेशक विवेकानंद डे की परिकल्पनाओं का मूर्त रूप है। सन् 2000 में विवेकानंद ने नेत्रहीनों को संगीत सिखाने का बीड़ा उठाया। वे बताते हैं कि बहुत कठिन था कि नेत्रहीनों को संगीत की भाषा सिखायी जाये। उन्होंने ...श...स...सि...के आधार पर अल्फाजों के जरिये संगीत सिखाना शुरू किया। फिर नेत्रहीनों की ब्रेल लिपि के अनुसार उन्हें मात्रा का ज्ञान दिया गया। घुंघरू और करकस बजाने वाले प्रीतपाल सिंह के अनुसार शुरू में थोड़ी दिक्कत हुई, लेकिन फिर धीरे-धीरे सब कुछ सामान्य होता चला गया। इस म्यूजिकल बैंड में जयदेव -कैसियो, सियाराम सिंह - गिटार, संजीत - थ्री सेट, दीपक कुमार ठाकुर - परकेसन, अमर जो - नाल एवं तबला और प्रीतपाल - घुंघरू करकस बजाते हैं। ये सभी एकल और समूह में गाते भी हैं। इनके सामने फिलवक्त जो दिक्कत है, वह म्यूजिकल इन्स्ट्रूमेंट की है। विवेकानंद डे के अनुसार पूरी टीम में प्रतिभा है और कुछ करने का जज्बा भी, लेकिन जहां दिक्कत उत्पन्न हो रही है वह है आर्थिक मदद की। उन्होंने बताया कि अगर आर्थिक मदद मिल जाती है और उचित स्थान तो निश्चित ही नेत्रहीनों का यह म्यूकिल बैंड देश ही नहीं, बल्कि विदेशों में अपनी अलग पहचान बनाता। इस म्यूजिकल बैंड की अभ्यास की शुरुआत एक सामूहिक गीत से होती है। गीत होता है ...मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास, हम होंगे कामयाब एक दिन।

i next
Jamshedpur, 26 November 2012 Pg 5

'रिदम' की धुन पर झूम उठे ऑडियंस

- Special बच्चों ने भी दिखाया जलवा
- रांची से भी पहुंचे थे artists

i next reporter

JAMSHEDPUR (25 Nov): सिटी बेस्ड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन रिद्म की ओर से संडे को बिष्टुपुर स्थित माइकल जॉन ऑडिटोरियम में सिंगिंग प्रोग्राम 'धुन' ऑर्गनाइज किया गया. इसका आयोजन रिद्म के 11 साल कंप्लीट होने के मौके पर किया गया था.

इस दौरान रिद्म के आर्टिस्ट्स ने अपनी मनमोहक संगीत की प्रस्तुति कर ऑडिटोरियम में मौजूद लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया.

दिखाया जलवा

मौके पर स्पेशल बच्चों ने भी शानदार प्रस्तुति दी. उनका कॉन्फिडेंस देखते बन रहा था. प्रोग्राम में हर पीढ़ी के इंटरेस्ट के मुताबिक गीतों का सेलेक्शन किया गया था. फिजिकली चैलेंज्ड बच्चों का मनोबल बढ़ाने के लिए रिद्म के अधिकारियों ने भी साथ दिया और एक्सिथित लोगों का भरपूर मनोरंजन किया.

प्रोग्राम के दौरान प्रस्तुति देती आर्टिस्ट.

इन्होंने दी प्रस्तुति

इस दौरान बाल कलाकारों अनिरुद्ध, दीपानीता, राजलक्ष्मी व रिंकू के अलावा रिद्म के फाउंडर विवेकानंद डे के नेतृत्व में अखिलेश, अनिन्दिता, आयुष, बिट्टू, गौरव, हरिराम, जयदेव, काव्या, करन, लता माकरा, निशांत, प्रीतपाल, राखी, संजीव, संध्या, सर्वनारायण, शिवम, सुमित, सुष्मिता, सूरजे, विजय व रांची के कुशल, मधु, निहारिका, रुचिर, सोनल, शौनक, समर, ट्विंकल, पल्लव, सारांश व विवेक ने भी अपनी प्रस्तुति दी.

'धुन' मे बच्चों ने किया धमाल

जागरण प्रतिनिधि, जमशेदपुर : शारीरिक व मानसिक निश्शक्त बच्चों ने रविवार को माइकल जॉन प्रेक्षागृह में गीत-संगीत की शानदार प्रस्तुति देकर धमाल मचा दिया। सांस्कृतिक संस्था रिद्म की ग्यारहवीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम 'धुन' सामान्य बच्चों के साथ मिलकर निश्शक्त बच्चों ने दर्शकों का मन मोह लिया। 'संगीत के माध्यम से सबका कल्याण' जैसी मानवीय संवेदनाओं का संदेश दने वाली संस्था रिद्म ने अपने छात्रों विशेषकर शरीरिक निश्शक्त एवं सामान्य दोनों के जरिए एक से बढ़कर एक मनोरंजक प्रस्तुतियां दीं।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एसडीओ सुबोध कुमार ने रिद्म के मानद सचिव विवेकानंद डे की सराहना करते हुए कहा कि वे रिद्म के विकास के लिए अपने स्तर पर हरसंभव मदद करेंगे। कार्यक्रम की शुरुआत नेत्रहीन बच्चों ने शोर फिल्म के गीत जीवन जीने का नाम... पेशकर की। इसके बाद कक्षा दो और कक्षा चार के बच्चों अनिरुद्ध, दीपान्निता, रिंकू व राजलक्ष्मी ने 'ऐ दिल है मुश्किल...' गीत पर सिंथेसाइजर बजाकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। फिर गौरव, हरि टुडू, करन, मकरा सोरेन, निशांत, शिवम, सोनल व शौनक ने फिल्म श्री 420 के गीत मेरा जूता है जापानी... पर स्पेनिश गिटार बजाकर शानदार प्रस्तुति दी।

माइकल जॉन प्रेक्षागृह में गीत प्रस्तुत करते रिद्म के सदस्य जागरण

जमशेदपुर, 26 नवंबर 2012 दैनिक जागरण 3

HINDUSTAN TIMES, RANCHI
MONDAY, NOVEMBER 26, 2012 02

Special talent

Special children perform during *Dhun*, a musical programme, organised by Rhythm at Michael John Auditorium in Jamshedpur on Sunday. ARVIND SHARMA

हिन्दुस्तान • जमशेदपुर • सोमवार • 26 नवंबर 2012 6

दृष्टिहीन प्रतिभाओं के सुरों से सजी शाम

जमशेदपुर | वरीय संवाददाता

रिद्म के 11वें धुन म्यूजिकल कार्यक्रम को दृष्टिहीन कलाकारों ने अपने सशक्त गायन और संगीत की प्रस्तुति से यादगार बना दिया। माइकल जॉन प्रेक्षागृह में रविवार की सुबह 'धुन' संगीत कार्यक्रम का उद्घाटन धालभूम के एसडीओ सुबोध कुमार ने किया। मौके पर कर्नल जीएम कुलकर्णी, अनिल उरांव, केबी मिश्र एवं चार्ल्स बोरोमियो अतिथि के रूप

माइकल जॉन ऑडिटोरियम में रविवार को आयोजित रिदम संस्था के कार्यक्रम के दौरान गीत प्रस्तुत करते दृष्टिहीन कलाकार। • हिन्दुस्तान

सन्मार्ग 09
रांची, सोमवार, 26 नवंबर 2012
www.sanmargjharkhand.com

रिद्म का 11वां स्थापना दिवस आयोजित

जमशेदपुर : माईकल जॉन प्रेक्षागृह में सांस्कृतिक संस्था रिद्म के 11वां स्थापना दिवस आयोजित की गयी। इस अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम 'धुन' में प्रतिभागियों ने मनमोहक संगीत प्रस्तुत कर दर्शकों का मनमोह लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन धालभूम अनुमंडलाधिकारी सुबोध कुमार ने दीपप्रज्वलित कर किया। संगीत की माध्यम से सबका कल्याण जैसी मानवीय संवेदनाओं का संदेश देने वाली संस्थाई अपने छात्रों विशेष कर शरीर नि:शक्त एवं सामान्य दोनों के जरिये एक से बढ़कर एक मनोरंजक प्रस्तुतियां दी। इस संस्था का स्थापना 2001 में किया गया तथा इस संस्था का संस्थापक विवेकानन्द डे ने मानसिक तथा शारीरिक रूप से लाचार बच्चों को रीद्म के जरिये एक मंच देने का कार्य किया। इस समारोह को संबोधित करते हुए एसडीएम सुबोध कुमार ने कहा कि हमें मानव जीवन मिलने के नाते दूसरे के हित में कार्य करना आवश्यक है, खासकर बेसहारों को साहारा देकर उसके जीवन को सफल तथा खुशियाली प्रदान करना ही सबसे बड़ा सेवा है, जो रिद्म द्वारा लाचार तथा बेबस बच्चों को एक मंच देने का कार्य किया है। उन्होंने संस्था को अपनी ओर से हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया। इस कार्यक्रम स्वागत् भाषण कर्नल, कुलकर्णी तथा मंच का संचालन उदय चंद्रवंशी ने किया।

चमकता आईना, जमशेदपुर सोमवार दिनांक२६ नवंबर २०१२ दो

रिद्म का 11वां स्थापना दिवस समारोह संपन्न

जमशेदपुर : माइकल जॉन प्रेक्षागृह में सांस्कृतिक संस्था रिद्म का 11वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित की गयी। इस अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम 'धुन' में प्रतिभागियों ने मनमोहक संगीत प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्र मुग्ध किया। कार्यक्रम का उद्घाटन धालभूम अनुमंडलाधिकारी सुबोध कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया। संस्था के द्वारा नि:शक्त बच्चों के द्वारा कई मनोरंजक प्रस्तुतियां दी। इस समारोह को संबोधित करते हुए एसडीएम सुबोध कुमार ने कहा कि हमें मानव जीवन मिलने के नाते दूसरे के हित में कार्य करना आवश्यक है, खासकर बेसहारों को साहारा देकर उसके जीवन को सफल तथा खुशियाली प्रदान करना ही सबसे बड़ा सेवा है, जो रिद्म द्वारा लाचार तथा बेबस बच्चों को एक मंच देने का कार्य किया है। उन्होंने संस्था को अपनी ओर से हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम स्वागत् भाषण कर्नल, कुलकर्णी तथा मंच का संचालन उदय चंद्रवंशी ने किया।